JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भिवानी जिले के गांव कुंगड़ में पीने के पानी सम्बन्धी एक अध्ययन

दिनेश गोयत
शोधार्थी, भूगोल विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर–124021, रोहतक (हरियाणा)

डॉ० सुधीर मलिक
प्रोफेसर, भूगोल विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर–124021, रोहतक (हरियाणा)

सामान्य सारांश

पानी सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों में से एक है। पृथ्वी पर जीवन पानी पर निर्भर करता है। जल विश्व की धरोहर है। मानव समाज के लिए अमृत है। भोजन के बिना रहना संभव है, लेकिन कुछ दिनों के लिए भी पीने के पानी के बिना रहना निश्चित रूप से जीवन के लिए खतरनाक है। ऋग्वेद में जल को औषधि कहा गया है। इसलिए पानी जीवन की बुनियादी जरूरतों में से एक है। इसलिए हम सभी भली–भांति जानते हैं कि जल ही जीवन है। यही करण है कि सभी सभ्यताओं का विकास जल की उपलब्धता वाले स्थानों पर हुआ। यह सर्वविदित है कि दुनिया भर में बीमारियों और मौतों के एक उच्च अनुपात की घटना असुरक्षित पीने के पानी से जुड़ी हुई है। इसलिए स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति में सुधार के लिए पीने योग्य या सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता एक महत्वपूर्ण तत्व है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की कमी में उनके प्रबंधन का महत्वपूर्ण योगदान है। उचित प्रबंधन और नियोजन के बगैर उन क्षेत्रों में भी पानी की कमी महसूस की गई है जहां पर पानी की उपलब्धता समुचित है। भिवानी जिले की बवानी खेड़ा तहसील में आने वाले गांव कुंगड़ में इसी प्रकार की समस्या देखने को मिली है। अध्ययन क्षेत्र में समुचित प्रबंधन न होने के कारण लोगों को पीने के पानी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इस शोध पत्र में प्रबंधन की कुछ कमियों को उजागर किया गया।

यह बताया गया है कि दुनिया के ताजे पानी के केवल 4 प्रतिशत संसाधन भारत में उपलब्ध हैं जबकि भारत में दुनिया की आबादी का 17 प्रतिशत है। यह भारत में पानी की कमी को दर्शाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 47 में राज्य सरकारों के पास जनता को सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी है। एक अनुमान के अनुसार 64 प्रतिशत ग्रामीण आबादी और 91 प्रतिशत शहरी लोगों के पास सुरक्षित

पेयजल है। सीमित संसाधनों के कारण भारत में पानी की उपलब्धता लगभग तय है। लेकिन बढ़ती भारतीय आबादी के साथ पानी की प्रति व्यक्ति उपलब्धता लगातार कम हो रही है।

आज, पीने के पानी की उपलब्धता नीति निर्माताओं, योजनाकारों, वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों के सामने एक गंभीर चुनौती है। समस्या वास्तव में जहां जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, उन विकासशील देशों में पैदा होती है, जल संसाधनों का प्रदूषण खतरनाक रूप से अधिक बढ़ रहा है। पीने के पानी की खराब गुणवत्ता से बीमारी और यहां तक की मृत्यु भी हो जाती है। श्रम उत्पादकता और आर्थिक विकास में भी रूकावट आ जाती है। यहां तक की असुरक्षित पानी पीने के कारण बच्चों की स्कूली शिक्षा प्रभावित होती है।

उद्देश्य

1 कुंगड़ गाँव में पीने के पानी की उपलब्धता और वितरण सम्बन्धी असमानताओं का अध्ययन करना।

अध्ययन प्राथमिक और द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। 2011 के लिए द्वितीय आंकड़ों की मदद से स्थानिय स्तर पर पीने के पानी की उपलब्धता और पहुंच का विश्लेषण किया गया। उपयुक्त कार्टोग्राफिक तकनीकों (पाई आरेख, बार आरेख आदि) का उपयोग डेटा के प्रतिनिधित्व के लिए हुआ है। सॉफ्टवेयर आर्कजीआईएस 10.3 की मदद से मैपिंग का काम किया गया।

अध्ययन क्षेत्र

कुंगड़ हरियाणा के भिवानी जिले का एक गाँव है जो देश के उत्तर–पश्चिम भाग में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र जिला मुख्यालय, भिवानी से 32 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। कुंगड़ गाँव $29^0$00′ 00.85′′ से $29^0$00′ 40.57′′ उत्तरी अक्षांश और $76^0$04′ 47.19′′ से $76^0$06′′ 00.51′′ पूर्व देशांतर (Google Earth, 2017) के बीच स्थित है। कुंगड़ का नाम एक बहुत प्रसिद्ध जमींदार कुंवर सिंह से लिया गया है। लोगों के यहाँ आने से पहले, वे डोसी की पहाड़ी के पास रहते थे।

जाट समुदाय में केवल एक ही घर था। इसीलिए उन्हें प्रताड़ित किया गया। एक दिन वे सभी डोसी के लोगों के साथ लड़ने के बाद यहाँ आए। इसलिए उन्हें गोयत नाम मिला। फिर वे यहाँ आकर बस गए। देश के विभिन्न क्षेत्रों में जहाँ भी गोयत फैले उन सभी का निकास गांव कुंगड़ से ही है। 2011 की भारत की जनगणना के अनुसार, गाँव में 9846 की आबादी के साथ 1902 घर थे जिसमें 5292 पुरुष और 4554 महिलाएँ थीं। कुंगड़ दो प्रभागों में हैं – छोटा पाना और बड़ा पाना।

मानचित्र 1.1

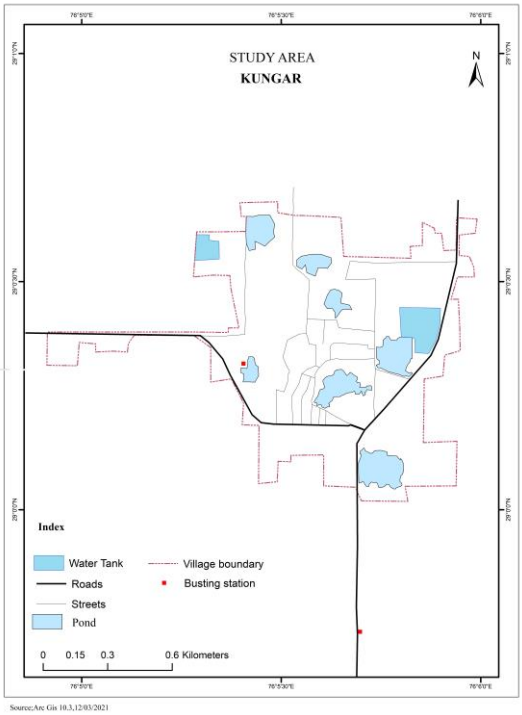

Source;Arc Gis 10.3,12/03/2021

परिणाम और चर्चा

गांव कुंगड़ को पानी आपूर्ति की दृष्टि से चार भागों में बांटा गया है। जहां अलग–अलग जगह से पानी की आपूर्ति दी जाती है। इसमें दो जलकर, एक बूस्टिंग स्टेशन और एक ट्यूबवेल शामिल है। इससे पहले गांव में एक जलघर हुआ करता था फिर उसके बाद गांव के एक हिस्से में पानी की आपूर्ति सही तरीके से न हो पाने के कारण वहां पर बूस्टिंग स्टेशन स्थापित किया गया उसके बाद प्राचीन जलघर में पानी की गुणवत्ता प्रभावित होने से गांव के एक हिस्से में पानी की सप्लाई ट्यूबवेल द्वारा दी जाने लगी। जब पानी की गुणवत्ता बहुत ज्यादा खराब हो गई तो गांव के दूसरे हिस्से में एक जलघर का निर्माण करवाया गया जिसमें जल शुद्धि यंत्र लगाकर गांव में पानी दिया जाने लगा।

गांव में 100 प्रतिशत घरों में पाइप द्वारा जल की सप्लाई दी गई है। गांव में पानी की उपलब्धता पर्याप्त होने के बावजूद भी पानी के प्रबंधन में कमी के कारण लोगों को पीने के पानी की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इसका कारण यह है कि गांव में नए जल घर को छोड़कर बाकी तीनों स्त्रोतों की गुणवत्ता में कमी पाई गई है। यहाँ उपलब्ध पानी में टीडीएस 2500 से 2600 तक है। इसके कारण तीनों जगह गुणवत्ता परक पीने के पानी की कमी महसूस की जाती है। जबकि नए जल घर में पीने के पानी की गुणवत्ता उत्तम है। यदि समुचित प्रबंध किया जाए तो पूरे गांव में सप्लाई दी जा सकती है।

पीने के पानी के लिए विभाग द्वारा गांव में कोई भी हैंडपंप नहीं लगवाया गया। इसके लिए न ही कोई बजट में प्रावधान रखा गया।

गांव में सरपंच, पंच या जल से संबंधित कमेटी के सदस्यों को किसी भी प्रकार का कोई प्रशिक्षण नहीं दिया गया। न ही विभाग की तरफ से बैक्टीरिया लॉजिकल टेस्ट के लिए कोई किट मुहैया कराई गई। जिसके कारण से समय–समय पर पानी की गुणवत्ता को चेक कर पाना भी संभव नहीं रहा। सर्वे में पता चला की गांव के लोगों के द्वारा जल की गुणवत्ता को चेक करने के लिए जब दिया गया तो उसमें केवल टीडीएस की मात्रा को माप करके वापस दे दिया गया उसके बाकी मानकों पर कोई बात भी नहीं की गई।

नहर के जल पर आधारित पानी की सप्लाई जब तक नहीं होगी तब तक पीने के पानी में गुणवत्ता को बरकरार रख पाना काफी मुश्किल होता है और गांव में नहर के पानी की आपूर्ति प्राचीन जलघर में ना के बराबर रह गई है। क्योंकि सप्लाई की नालियों को नष्ट कर दिया गया है। जिसके कारण से ट्यूबवेल के पानी की सप्लाई दी जाती है। जिसकी गुणवत्ता उत्तम नहीं है।

तालिका : 1.1

पानी आपूर्ति केन्द्र	गुणवत्ता
प्राचीन जल घर	2700
बूस्टिंग स्टेशन	1800
ट्यूबवेल	2500
नया जलघर	120

स्त्रोत : प्राथमिक आँकड़े, 2021

प्रबंधन की कमी के कारण गांव में नहर का पानी जो नए जलघर तक पहुंच रहा है उसे भी काफी समस्या का सामना करना पड़ता है। जिस समय खेतों में धान की फसल की खेती की जाती है उस समय जलघर तक पहुंचने वाले पानी की मात्रा 25 प्रतिशत से भी कम रह जाती है।

गांव में सर्वे के दौरान लोगों से बात करते समय पता चला कि जन स्वास्थ्य विभाग के जेई पानी की गुणवत्ता की तरफ अपना ध्यान बिल्कुल भी नहीं रखते हैं। वह गांव में बिल्कुल निष्क्रिय हैं।

गांव में पेयजल की इन समस्याओं के कारण पानी के निजीकरण को बढ़ावा मिल रहा है। गांव के तीन हिस्सों में हर रोज लगभग 250 से 300 पानी के कैंपर सप्लाई किए जाते हैं। जिसके लिए गांव के लोगों को प्रति कैंपर 500 से 600 रूपये महीना खर्च करना पड़ता है या इसके अलावा बहुत से लोगों ने जो आर्थिक रूप से सम्पन्न है अपने घरों में जल शुद्धि यंत्र लगवा लिए हैं। परंतु आपूर्ति के पानी की गुणवत्ता इतनी ज्यादा खराब है कि वह भी सही तरीके से काम नहीं कर पाते हैं और जल्दी ही खराब हो जाते हैं।

वितरण सम्बन्धी असमानता

जल घर की अवस्थिति

अध्ययन क्षेत्र में जो प्राचीन जलघर है, उसके साथ में ही तालाब है। पहले तालाब का पानी साफ रहता था तो जलघर के पानी पर ज्यादा फर्क नहीं पड़ता था परंतु अब तालाब में गांव का गंदा पानी भी आता है जिसके कारण गहराई ज्यादा होने से जलघर का पानी भी खराब होने लगा है, क्योंकि जल घर में जो टैंक बनाए गए हैं उनकी गहराई काफी ज्यादा है।

चित्र : 1.1

स्त्रोत : प्राथमिक आँकड़ें, 2021

जल का अत्यधिक दोहन

सभी घरों तक पानी की सप्लाई होने से पानी का खर्च भी कई गुना बढ़ गया है। जिसके कारण ट्यूबवेल से पानी का अत्यधिक दोहन हुआ है और उसकी गुणवत्ता में भी गिरावट आई है। प्रदूषित जल में भी वृद्धि हुई ळें

खराब प्रबंधन

उचित प्रबंध न होने के कारण गुणवत्ता युक्त पानी सही से वितरित नहीं हो रहा जहां गांव के एक हिस्से में शुद्ध जल से पशुओं को नहलाना, गाड़ी धोना और अन्य घरेलू कार्यों में प्रयोग किया जाता है वहीं दूसरी तरफ गांव के अन्य हिस्सों में उसी समय पीने के शुद्ध पानी का अभाव महसूस किया जाता है।

जनसंख्या वृद्धि

जनसंख्या में हो रही निरंतर वृद्धि से गांव में पीने के पानी की मांग काफी बढ़ी है और अत्यधिक दोहन से जल स्त्रोतों पर भी दबाव बढ़ा है जिसके कारण पानी की गुणवत्ता खराब हुई है इसके कारण लोगों के दातों की समस्या सामने आई है।

समाधान

- गांव में नहर के पानी की जो आपूर्ति बाधित हुई है, उसे फिर से शुरू किया जाए क्योंकि नहर का पानी बाकी स्त्रोतों से ज्यादा गुणवत्ता परक होता है।
- पीने के पानी का उचित प्रबंधन किया जा सके ताकि सभी को समान रूप से पानी वितरित किया जा सके और गुणवत्ता परक पानी वितरित किया जा सके।
- गांव में सर्वे के दौरान पता चला कि गांव में नहर के पास 9 एकड़ भूमि है। जहां पर यदि नया जलघर स्थापित किया जाए तो गांव में पानी की समस्या को पूर्ण रूप से समाप्त किया जा सकता है। क्योंकि यहां पर नहर का पानी भी उचित रूप से मुहैया हो सकेगा और उसके साथ ही यहां पर जो ट्यूबवेल स्थापित है उनके पानी की गुणवत्ता भी काफी उत्तम है। पुराने जल घर में मरम्मत की काफी आवश्यकता है जिसके लिए लगभग एक करोड़ रूपए पहले भी प्रस्तावित किए जा चुके हैं परंतु मरम्मत का कार्य सम्पन्न नहीं हो सका।

मानचित्र : 1.2

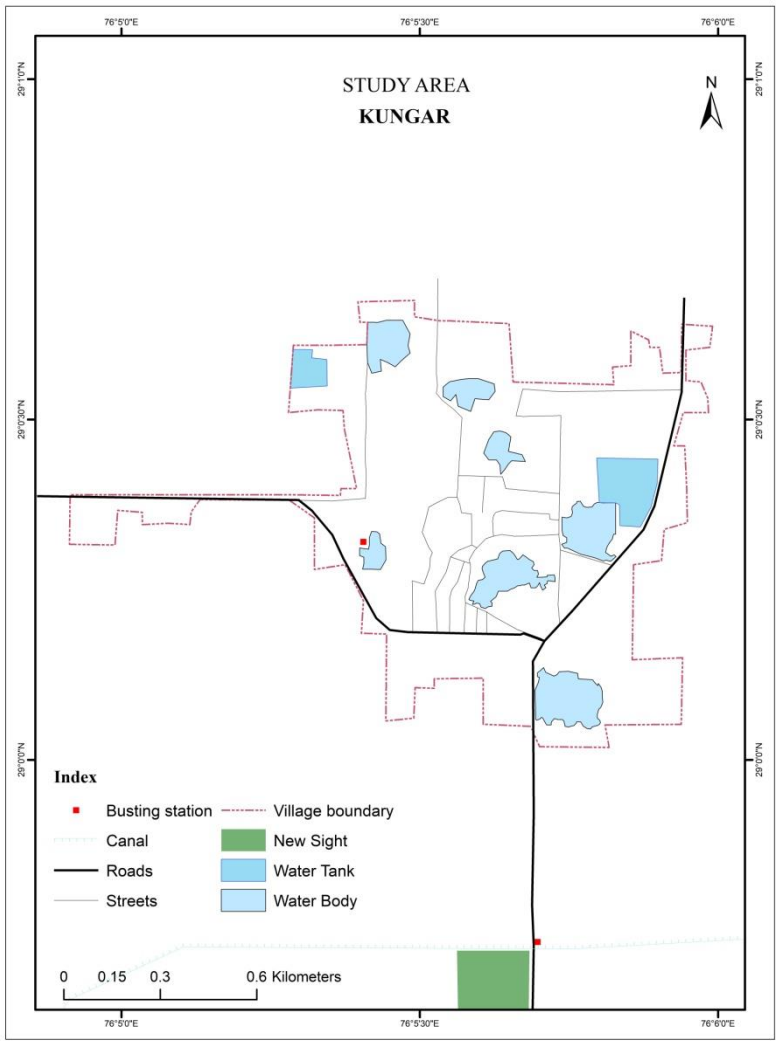

- लोगों को पीने के पानी के बारे में जागरूक किया जाए उसकी गुणवत्ता के बारे में प्रशिक्षण दिया जाए और समय–समय पर गांव में पानी की गुणवत्ता की जांच की जाए।

संदर्भ सूची

- ग्लीक, पी०एच० (1993), संकट में पानी : दुनिया के ताजा जल संसाधनों के लि एक गाइड, न्यूयॉर्क, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
- खान, एस० (2009), पानी तक पहुंच का अधिकार : एक कानूनी परिप्रेक्ष्य, सस्टेनेबल वाटर मैनेजमेंट चैलेंजेस टेक्नोलॉजीज एंड सॉल्यूशन, नई दिल्ली, पेंटागन प्रेस, पृ० 279–297
- डब्ल्यूएचओ और यूनिसेफ (2010), स्वच्छता और पेय–जल पर प्रगति : 2010 अद्यतन, 23 दिसंबर, 2013 को एक्सेस किया गया
- सांगवान, एन० (1991), एक नव संगठित भारतीय राज्य में विकास प्रक्रिया : एक हरियाणा का केस स्टडी, भूगोल विभाग, पीएच०डी० थीसिस, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ (भारत)

- चाँद, डी० (2009), ग्रामीण क्षेत्र में जल आपूर्ति की उपलब्धता, जल संसाधन प्रबंधन, नई दिल्ली, पेंटागन प्रेस, पृ० 216–225
- भारतीय जनगणना, 2011
- https://jaljeevanmission.gov.in/
- Goggle Earth, 2017